DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR

BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)

B.A Part-I (HONS) Paper-II
Mo- 9415376545

LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No................. Date. 14/07/20

Lecture-06

~~श्री अरविन्दो~~ का राज्य संबंधी विचार

श्री अरविन्दो की राज्य संबंधी विचारधारा विकासवादी है। वे विवेक को मानव के सामाजिक एवं राजनीतिक विकास का कारण मानते हैं। मानव विकास का प्रथम स्तर मूलभूत विवेक है। द्वितीय स्तर पर विवेक का युग प्रारम्भ होता है जिसमें केवल विवेक के आधार पर ही समस्त ~~क्रिया-कलाप~~ निष्पादित होते हैं। तीसरी स्थिति भविष्य की अतिविवेकी मानवपरक चेतना होगी जिसके द्वारा मानव का पूर्ण विकास होकर उसके जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन दिखायी देगा। समाज में ईश्वरीय पूर्णता के दर्शन होने लगेंगे। वे राज्य को केवल मात्र यान्त्रिक इकाई ही मानते थे।

श्री अरविन्दो की विचारधारा में राज्य को अधिक महत्व नहीं दिया गया है। वे समष्टिवादी नहीं हैं। व्यक्तिवाद उनके विचारों का प्रमुख आधार था। किन्तु यह संकीर्ण व्यक्तिवाद न होकर मानव गरिमा को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने वाला व्यक्तिवाद है। उनके व्यक्तिवाद में दम्भ को कोई स्थान नहीं है। अहं को समष्टि में समर्पित कर दिया गया है। अरविन्दो इस मान्यता को अस्वीकार करते हैं कि 'राज्य श्रेष्ठ मस्तिष्कों का प्रतिनिधित्व करता है'। राज्य एक भौतिक आवश्यकता है। उन्होंने कहा — "राज्य एक सुविधा है और अपेक्षाकृत हमारे सामूहिक विकास की एक भद्दी सुविधा है, जिसे कभी भी स्वयं में साध्य नहीं बनाया जाना चाहिए।" उन्होंने राज्य के सर्वोच्चता को चुनौती दी और कहा कि राज्य को मानव प्रगति का सर्वोत्तम साधन बनना हास्यास्पद है। मनुष्य समुदाय के द्वारा जीवित रहता है, अतः वह अपना विकास स्वयं व्यक्तिगत रूप से सामूहिक रूप से कर सकता है। श्री अरविन्दो ने राज्य के आंगिक सिद्धांत की आलोचना की है। वे केवल राज्य के सन्दर्भ में आंगिक समतुलना प्रस्तुत करते हैं। वे राज्य को अंग सदृश्य न मानकर केवल एक यन्त्र मानते हैं। ऐसा यंत्र जिसके द्वारा मानव मस्तिष्क पर नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास किया जाता है।

P.T.O

Scanned with CamScanner

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR
BY:DR. ANANTESHWAR KUMAR YADAV
(ASSIST. PROFESSOR, GPTT)
Mo-9415376545
B.A Part-I (HON'S) Paper-II
LALIT NARAYAN MITHILA UNIVERSITY, DARBHANGA-846004(BIHAR)

Ref. No.................. Date.14/07/20.....

राज्य के कार्यों के बारे में अरविन्दो के विचार अधिक उदारवादी नहीं थे। वे राज्य के कार्य को सीमित करने के पक्षपाती हैं। राज्य का कार्य केवल बाधाओं को दूर करना तथा अन्याय को रोकना आदि है। हर्बर्ट स्पेंसर तथा अरविन्दो के विचारों में काफी साम्यता है। दोनों की यह धारणा है कि राज्य द्वारा न तो शिक्षण कार्य किया जाना चाहिए और न ही राज्य द्वारा किसी धर्म अथवा धर्म विशेष का पालन कराया जाना चाहिए। ये विचार श्री अरविंदो को व्यक्तिवादियों की श्रेणी में ला खड़ा करते हैं, किन्तु श्री अरविन्दो आर्थिक व्यक्तिवादी के समर्थक नहीं थे। वे टी० एच० ग्रीन की भाँति व्यक्ति के सर्वांगीण विकास तथा आत्म विकास के पक्षपाती थे। वे समाजवादी दर्शन के लोककल्याणकारी आर्थिक कार्यक्रम से प्रभावित थे। लोककल्याणकारी समाजवादी विचारधारा का उद्देश्य उन्हें स्वीकार्य था। किन्तु वे इसके अन्तर्गत व्यक्ति तथा राज्य के उद्देश्यों को समान मानने को तैयार न थे। व्यक्ति के जीवन का उद्देश्य परम तत्व की चेतना तथा मोक्ष प्राप्ति है। इसके विपरीत राज्य का उद्देश्य सामाजिक एवं आर्थिक आदर्शों की प्राप्ति है।

श्री अरविन्दो के अनुसार, समाज की आंगिक एकता पर ही राज्य की एकता आधारित है। स्वस्थ समाज द्वारा राज्य की स्थापना सम्भव है और राज्य की शक्ति पर ही समाज की एकता का आदर्श अवस्थित है। यदि राज्य विदेशी तथा अनांगिक है तो समुदाय का आंगिक जीवन संभव नहीं हो सकता। अतः पराधीन जनता के लिए यह अनिवार्य है कि सर्वप्रथम राज्य की प्राप्ति की जाये। राज्य के बिना पराधीन देश की जनता सामाजिक एवं बौद्धिक दृष्टि से जाग्रत नहीं हो सकती है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि श्री अरविन्दो ने राज्य की तुलना में राष्ट्र को अत्यधिक महत्व दिया क्योंकि राष्ट्र के अन्तर्गत स्वाभिमान एवं आत्मसम्मान की भावना कूट-कूट कर भरी है इसी के आधार पर पराधीनता से मुक्ति पाई जा सकती है।

Scanned with CamScanner